ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय

पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)

फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे | निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 27 अंकः 63 बुलेटिन अवधिः 11–15 अगस्त, 2018 दिनः शुक्रवार दिनाँकः 10 अगस्त, 2018

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान–नैनीताल				
	11/08/2018	12/08/2018	13/08/2018	14/08/2018	15/08/2018
वर्षा (मिमी0)	25	45	60	40	40
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	21	22	22	21	21
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	14	14	13	13	14
बादल आच्छादन	घने बादल	घने बादल	घने बादल	घने बादल	घने बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	90	95	95	95	90
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	50	55	55	55	50
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	004	004	006	006	004
वायु की दिशा	दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व

आगामी पांच दिनो मे, 13 अगस्त को भारी वर्षा तथा शेष दिनो मे मध्यम वर्षा होने के साथ आसमान में घने बादल छाये रहने की सम्भावना है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (3 – 9 अगस्त, 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान में मध्यम से घने बादल छाये रहे तथा अधिकतम तापमान 17.0 से 21.0 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 14.2 से 16.2 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- ❖ नत्रजन की आधी बची मात्रा का यूरिया के रुप में टाप ड्रेसिंग दो बार में कल्ला फूटते समय रोपाई के 20 दिन बाद तथा बाली बनने की प्रारम्भिक अवस्था यानि रोपाई के 40–50 दिन पर प्रयोग करें। नाइट्रोजन के टॉप ड्रेसिंग के समय खेत मे पर्याप्त नमी होना चाहिए तथा पत्तों पर वर्षा की बूंदे न हो।
- ❖ दलहनी एवं गन्ने की फसल में जल निकासी की उचित व्यवस्था करे।
- ❖ रोपित धान में खरपतवार के नियत्रंण हेतु प्रेटीलाक्लोर 50 ईसी रोपाई के तीन दिन के अंदर 1.5–2.0 लीटर मात्रा को 500 लीटर पानी मे घोल बनाकर छिड़काव करे।
- ❖ साइहैलोफॉप ब्यूटाइल 10 ईसी की 1 लीटर मात्रा को 500 लीटर पानी मे घोल बनाकर रोपाई के 20–25 दिन बाद प्रयोग करें।
- ❖ रोपित धान में खरपतवार के नियत्रंण हेतु ब्यूटाक्लोर (50 ईसी) (व्यापारिक नाम–मचेटी बेलाक्लोर, कैपक्लोर, पैराक्लोर) की 3 लीटर मात्रा को 750 ली0 पानी में घोल बनाकर रोपाई के 3 दिन के अंदर प्रयोग करे। *या*
- ❖ बिस्पायरिबैग सोडियम (10 ईसी) (नॉम्नीगोल्ड) 200 से 250 मिली0 मात्रा को रोपाई के 20–25 दिन के बाद 500 ली0 पानी का घोल बनाकर प्रयोग करने से हर प्रकार के खरपतवारो का नियत्रंण हो जाता हैं। *या* मैट सल्फयूरॉन मिथाइल + क्लोरो सल्फयूरॉन इथाइल की 20 ग्रा0 मात्रा को 500 ली0 पानी में घोल बनाकर रोपाई के 20–25 बाद या खरपतवार के 3–4 पत्ती आने की अवस्था पर प्रयोग करने पर चौड़ी पत्ती एवं मौथा वर्गीय खरपतवारो का नियत्रंण हो जाता है।

उद्यानप्रबन्धः

- ❖ मूली, बंदगोभी, ब्रोकली एवं शलजम की अगेती प्रजातियो का प्रतिरोपण करें।
- ❖ असिंचित मध्यम ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रों में अगस्त मध्य में सब्जी मटर की बुवाई हेतु मटर की अगेती किस्मों के बीज की व्यवस्था करें। ध्यान रहें की बीज उपचारित हो। साथ ही यदि अधिक वर्षा हो रही हो तो बीज की बुवाई 15 अगस्त के पश्चात ही करे। तथा समुद्र तल से 6000 से 8000 फीट की ऊँचाई वाले क्षेत्रो में बुवाई 25 अगस्त तक अवश्य ही पूरी कर लें।
- ❖ फ्रासबीन एवं लोबिया में सफेद सड़न की रोकथाम हेतु कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम/लीटर का छिड़काव करे।
- ❖ टमाटर एवं मिर्च की फसल मे जड़ एवं तना संधि सड़न रोग के नियंत्रण हेतु ट्राईकोडरमा 10 ग्राम/लीटर या कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ो की सिंचाई करें।
- ❖ मिर्च की फसल में ऊपर से डन्ठल काले पड़कर सूखने की समस्या की निदान हेतु संक्रमित शाखाओं को तोड़कर हटा दें एवं फल सड़न की समस्या हेतु कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ टमाटर की फसल मे पत्तियो पर धब्बे पड़ने एवं झुलसने पर मैनकोजेब 2.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- ❖ शिमलामिर्च मे फल सड़ने की स्थिति मे मैनकोजेब 2.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- ❖ फ्रासबीन की फलिया सड़ने एवं सफेद फफूंदी की बढ़वार दिखाई पड़ने पर कार्बन्डाजिम 1 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- ❖ अत्यधिक वर्षा के कारण फल पौधों के थालों में एकत्रित पानी के निकास की व्यवस्था सुनिश्चित करें।
- ❖ सदाबहार फल पौधों जैसे आम, अमरूद, नींबू, पपीता, लीची आदि फल पौधों को लगायें।
- ❖ बागीचों में खरपतवारों के नियंत्रण हेतु निराई–गुड़ाई करें।
- ❖ गुठलीदार फलों में गमोसिस रोग के नियंत्रण के लिए स्ट्रैप्टोसाईकलिन 0.01/या कापर आक्सीक्लोराइड 0.025 प्रतिशत का छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करें।
- ❖ आम, अमरुद, नीबू, लीची आदि फलो के प्रवर्धन की प्रक्रिया शुरु करे।
- ❖ सेब फलो के तोड़ने की प्रक्रिया प्रारम्भ करे। गत्ते की पेटियो मे भरकर विपणन करे।
- ❖ सेब के थालो मे जल निकास की उचित व्यवस्था करे।

पशुपालनप्रबन्धः

- ❖ मुर्गी पालन के उत्पादन में अधिक से अधिक लाभ हेतु मुर्गियो का समय से टीकाकरण करवायें।
- ❖ यदि पशुओं को जुएं या चीचड़ लग गये हो तो उन पर सुमिथियोन 1 प्रतिशत का छिड़काव करें।

- पशु को ब्याने के बाद अच्छी तरह से साफ–सफाई करके यूटरोटाने/हरीरा/गाइनोटोन नामक दवा में से किसी एक दवा की 200 मिली मात्रा सुबह शाम तीन दिनों तक गर्भाशय की सफाई हेतु देनी चाहिए।
- पशुओं को बारिश का पानी नहीं पिलाना चाहिए।
- पशुओ को संक्रामक रोग से बचाने हेतु टीकाकरण करवायें।
- अगस्त का महीना गाय/भैंसों की ब्याने का समय होता है अतः प्रसव प्रकोष्ठ को साफ–सुथरा करके इस्तेमाल हेतु तैयार रखें।
- प्रसव के तुरन्त बाद नवजात बच्चे की साफ–सफाई कर उसकी नाभी को धागे से बांधकर किसी साफ चाकू या ब्लेड से काटकर उस पर जैन्सन वायलेट पेन्ट अथवा टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए।
- अचानक तेज घूप व तेज वर्षा से पशुओं को बचायें क्योंकि इसकी वजह से त्वचा में जलन जैसा विकार उत्पन्न हो जाता है।
- इस ऋतुओं में कृमियों का प्रकोप बढ़ जाता है और इससे बचने के लिए कृमिनाशक का उपयोग निकटतम पशु चिकित्सक की सहायता से करें।
- ज्यादा हरे चारे से घोड़ों में केलिक होने का खतरा रहता है अतः इससे बचें।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो. ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर